दर्शन का सम्बन्ध धर्म से —

धर्म का सम्यक दर्शन मोक्ष प्रदान करता है। संस्कृत में कहा गया है - सम्यक दर्शन संपन्न कर्म बांध नहीं पाते। वास्तव में हम अपने कर्मों में बंधे होते हैं। आज कल तो कुछ ज्यादा ही हम अपने कर्मों से बंधे होते हैं।

विश्व में कई धर्म है। प्रत्येक धर्म की अपनी मान्यताएँ, धार्मिक क्रिया विधियां, विश्वास, धार्मिक स्वरूप, धार्मिक मूल्य और सत्य है। धर्म दर्शन के अंतर्गत धर्म के उपरोक्त विभिन्न तत्वों की बौद्धिक व्याख्या प्रस्तुत की जाती है।

प्रत्येक धर्म में परम सत्ता के रूप में किसी परा शक्ति की परिकल्पना की गई है। धर्म दर्शन के अन्तर्गत उस परम सत्ता के विषय में भी गूढ़ चिंतन और दार्शनिक सिद्धांत प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह धर्म दर्शन के अंतर्गत विभिन्न धर्मों का संपूर्ण विश्व के संदर्भ में विचार प्रस्तुत किया जाता है। धर्म विशेष में मान्य परम सत्ता का दार्शनिक स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है।

धर्म दर्शन का क्षेत्र व्यापक है। धर्म दर्शन के अंतर्गत, धर्म के दार्शनिक और आनुष्ठानिक भागों की तर्कपूर्ण व्याख्या की जाती है। धर्म के दार्शनिक भाग के अन्तर्गत, धर्म विशेष के मूल तत्व, उसके उद्देश्य और परम सत्ता की परिकल्पना होती है। धर्म दर्शन के अन्तर्गत परम सत्ता अथवा ईश्वर के अस्तित्व का दार्शनिक विवेचन किया जाता है कि क्या कोई परमसत्ता (ईश्वर) है?

प्रत्येक धर्म में उनके महापुरुष हुए हैं, जिनके जीवन के संबंध में अलौकिक कथनियां हैं। उनके अनुभवों और उपदेशों के उदाहरणों के आधार पर उस धर्म के सूक्ष्म दार्शनिक भाग की व्याख्या की जाती है। धर्म के आनुष्ठानिक भाग, जो कि किसी भी धर्म का स्थूल भाग होता है जिसमें पूजा पद्धतियाँ, अनुष्ठान, आचार संहिता, मान्यताएँ आदि होती है।